हाशिए का समाज और हिंदी-मराठी साहित्य

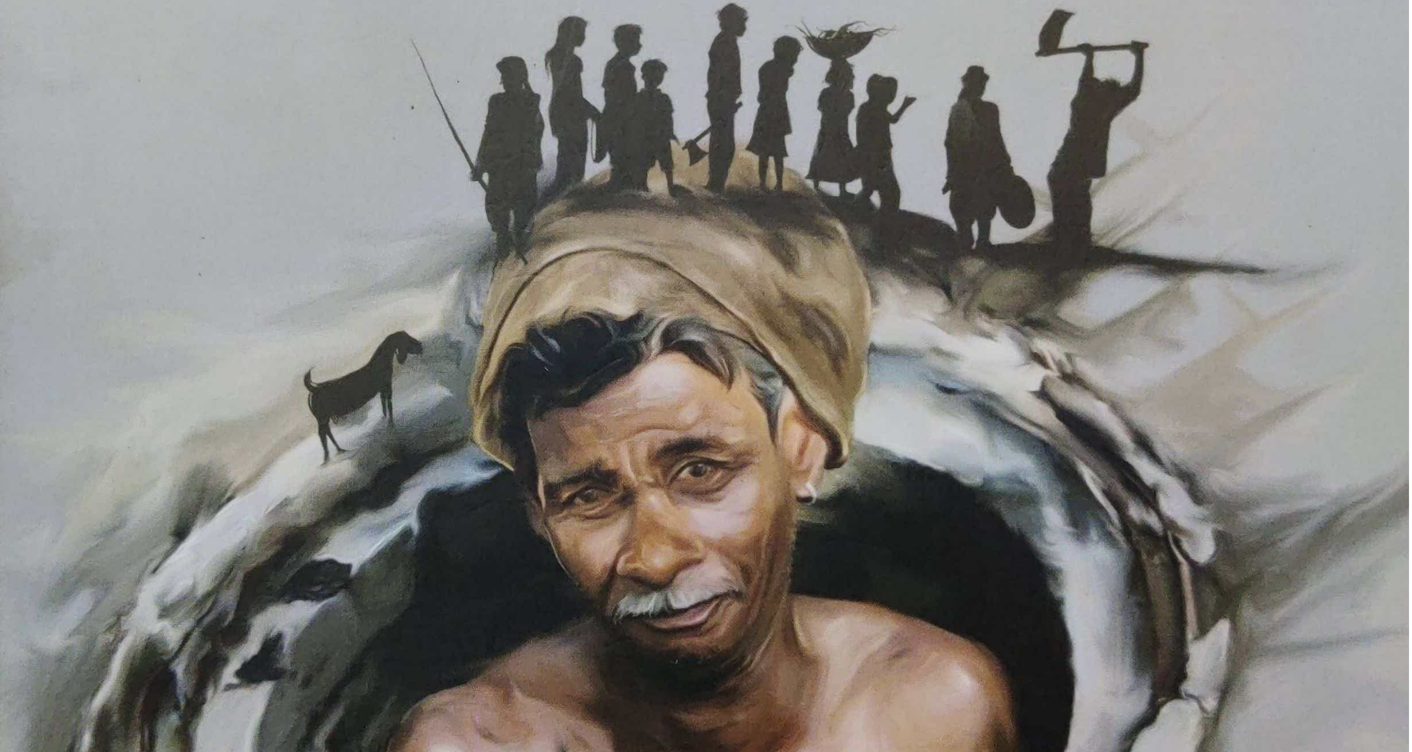

संपादक

डॉ. सतीश यादव डॉ. रणजीत जाधव

डॉ. संतोष कुलकर्णी प्रा. अमोल इंगळे

हाशिए का समाज और हिंदी - मराठी साहित्य

संपादक मंडल :- डॉ. सतीश यादव, डॉ. रणजीत जाधव,
डॉ. संतोष कुलकर्णी, प्रा. अमोल इंगळे

ISBN 978-93-5240-146-8

अरुणा प्रकाशन
103, ओमकार कॉम्प्लेक्स - अ,
खर्डेकर स्टॉप, औसा रोड, लातूर
मो. 9421486935, 9421371757

© लातूर जिला हिंदी साहित्य परिषद, लातूर

: प्रथम आवृत्ति :- नवंबर 2017

: मुद्रक : आर्टी ऑफसेट, लातूर

शब्द संयोजन : हिंदवी कॉम्प्यूटर, लातूर

मुखपृष्ठ रेखाटन :- विरु गुळवे 8600881127

मूल्य : 350.00 रुपये

*"हाशिए का समाज और हिंदी - मराठी साहित्य" इस स्मारिका में व्यक्त मतों से संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।

18. प्रेमचंद - ईदगाह और शतरंज के खिलाडी कहानी के संदर्भ में - **प्रा. डॉ. मदन भाऊराव काळे / 79**

19. रेणु की आँचलिक कहानियों में हाशिए पर खड़े लोग - **डॉ. गोरख निवृत्ती थोरात / 82**

20. दलित विमर्श में हाशिए का समाज - **डॉ. गजानन हरीराम बने / 85**

21. दलित विमर्श में हाशिए का समाज - **डॉ. विजयकुमार मधुकरराव कुलकर्णी / 88**

22. दलित आत्मकथाओं में हाशिए का समाज - **डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार / 91**

23. दलित आत्मकथाओं में हाशिए का समाज - **संतोष आदमाने / 94**

24. दलित आत्मकथाओं में हाशिए के समाज की नारी

(शिंकजे का दर्द और दोहरा अभिशाप में व्यक्त उत्पीडन और शोषण के संदर्भ में) - **प्रा. संजय गणपती भालेराव / 97**

25. संजीव की 'टीस' कहानी में हाशिए का समाज - **प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड / 101**

26. कहानियों में चित्रित दलित अस्मिता व जीवन संघर्ष

(डॉ. जीतेन्द्र विसारिया के कहानी संग्रह नये सजन घर आए के सन्दर्भ में) - **अशोक कुमार सखवार / 106**

27. समकालीन दलित कविता में हाशिए का समाज - **डॉ. प्रिया ए. / 109**

28. परिवर्तन का स्वर : पदचाप - **डॉ. संजय गडपायले / 114**

29. 'छुटकारा' कहानी में हाशिए के समाज का यथार्थ चित्रण - **डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड / 118**

30. स्त्री विमर्श और हाशिए के समाज- **अनुराधा / 121**

31. हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में व्यक्त हाशिए का समाज - **डॉ. पुष्पलता अग्रवाल / 122**

32. स्त्री -मुक्ति का सशक्त हस्ताक्षर : मैत्रेयी पुष्पा - **डॉ. संगीता श. उप्पे / 127**

33. 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में चित्रित हाशिए का समाज - **प्रा. नयन भादुले - राजमाने / 131**

34. सूर्यबाला की कहानियों में निम्नवर्ग - **प्रा. राम दगडू खलंग्रे / 135**

35. स्त्री विमर्श और मंजुल भगत का कथासाहित्य - **डॉ. बळीराम भुक्तरे, प्रशांत प्रकाशराव पाटील / 139**

36. मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में स्त्री जीवन: चिंतन और चुनौतियाँ - **ईशा वर्मा / 142**

37. हिंदी की महिला आत्मकथाओं में हाशिए का समाज - **प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार / 145**

38. आदिवासी विमर्श और हाशिए का समाज - **आदिनरयण बादावत / 149**

हिंदी की महिला आत्मकथाओं में हाशिए का समाज

प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

स्वतंत्रता के इतने वर्षो पश्चात भी समाज का शोषित, वंचित एवं दबा कुचला वर्ग समाज के मुख्य प्रवाह से कोसो दूर है, वह व्यवस्था में अपनी जगह कायम नहीं कर पाये हैं। समाज की घृणित एवं विकृत मानसिकता ने वंचितों को आज भी हाशिए पर ही रखा है। मुख्य व्यवस्था के अभाव में दरिद्रता, विषमता, अन्याय, अत्याचार, एवं शोषण हाशिए के समाज के अंगविशेष बन गए हैं। हाशिए के समाज को प्रवाह में आने से रोकने के लिए सामंती ताकतें सदैव सक्रिय होती हैं। दलित, स्त्री, किसान, मजदूर, आदिवासी आदि सदैव हाशिए पर ही रहे हैं। पुरुषप्रधान विकृत मानसिकता, दमन एवं शोषण नीती, जातीयता, धर्मांधता, अंधश्रध्दा, ऊँच-नीचता, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, कालाबाजारी, भ्रष्टाचार और भौतिक उपभोगी मानसिकता ने हाशिए के समाज को हाशिए पर ही रखा हैं। अपने स्वार्थी एवं अहंकारी अस्मिता के लिए दूसरों को कुचला जा रहा है और अपना हित किया जा रहा हैं। सामंती व्यवस्था ने अपनी जड़ें मजबुत बनाई हैं। व्यापार, उद्योग, राजनीति, धर्म, समाज, शिक्षा, आरोग्य एवं प्रशासन आदि अनेकों क्षेत्र में हाशिए के समाज को हाशिए पर ही रखा जा रहा हैं। मुख्य प्रवाह में लाने के लिए व्यवस्था नकारात्मक रुख अपना रही हैं। व्यवस्था में व्याप्त विकृति, विसंगति और विडंबना दलित, स्त्री, आदिवासियों को प्रताडित कर रही हैं। दलित, स्त्री और पिछड़े वर्ग को मुख्यधारा में लाने के लिए सभी स्तरो से सकारात्मक प्रयास की आवश्यकता हैं। हिन्दी साहित्य में हाशिए के समाज का ययार्थ रूप में अंकन किया हैं। आजादी के बाद दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यांक विमर्श द्वारा हाशिए के समाज का यथार्थ अंकन कर उन्हे न्याय देने का प्रयास किया गया है। हिन्दी साहित्य ने इस समाज की पीडा, वेदना, संत्रास दुख अन्याय एवं अत्याचार को उघाडने का सफल प्रयास किया हैं। हाशिए के समाज को मुख्यप्रवाह में लाने के लिए हिन्दी आत्मकथा नें भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। हिन्दी स्त्री लेखिकाओं ने दलितों एवं स्त्रियों में चेतना, संघर्ष एवं आत्मनिर्भरता का भाव भी निर्माण किया हैं। आत्मकथा लेखिकाओंने हाशिए के समाज में ऊर्जा का संचार करने का और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सचेत करने का प्रयास किया हैं। हाशिए के लोगों की पीडा को वाणी प्रदान करने का कार्य किया गया है।

हिन्दी महिला आत्मकथाओं में मैत्रेयी पुष्पा की **कस्तुरी कुण्डल बसै,-गुडिया भीतर गुडिया** आत्मकथा में परंपरागत स्त्री विरोधी मूल्यों पर प्रहार किया हैं। 'शिकंजे का दर्द' सुशीला टाकभौरे लिखित आत्मकथा दलित नारी जीवन का जीवंत दस्तावेज है। नारी के दमन, शोषण और संघर्ष की गाथा हैं। शिकंजे का दर्द पुरुष और समाज के शिकंजे में फँसी स्त्री की गाथा है। शिकंजे का दर्द के संदर्भ में सुशीला टाकभौरे लिखती है, शिकंजा यानी पंजा, जिसकी जकडन में रहकर कुछ कर पाना कठिन हैं। शिकंजा यानी कठघरा जिसमें कैद होकर उसके बाहर जाना कठिन हैं।

कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा **लगता नही है दिल मेरा में** पुत्री को पुत्र के सामने तुच्छ, एवं मूल्यहीन माना जाता है। इस लिंगभेदी मानसिकता को उजागर किया हैं। पदमा सचदेव की **बूँद-बावडी** में पारिवारिक समस्या को उजागर किया गया है। परिवार स्त्रियों को किस प्रकार घुट-घुट कर जीना पडता है, इस वास्तविकता को उजागर किया गया है। आयदान उर्मिला

पवार की आत्मकथा में दलित स्त्रियों की दयनीय अवस्था का चित्रण है। उर्मिला पवार को बचपन में ही दलित होने का दुखद अनुभव मिलता हैं। दलित होने की पीडा, और आर्थिक शोषण कों आयदान में उजागर किया है। आयदान में कोंकण के रत्नागिरी और फणसावंली की भाषा, संस्कृति एवं जीवन ही मुख्य रूप से सामने आता हैं। आगे फिर मुंबई और वहाँ की झोपडपट्टी का वर्णन आता है, जिसमें उर्मिला का संघर्षमय जीवन व्यतीत हुआ है। कुसुम अंसल 'की जो कहां नहीं गया' जीवनरूपी आत्मकथा हैं। 'कुड़ा कबाडा' अजीत कौर की आत्मकथा में औरत होने की कथा हैं। परिवार से लेकर ससुराल तक के पीडायुक्त जीवन का वर्णन आत्मकथा में हैं। स्त्री को कुडा समझनेकी विकृत मानसिकता का चित्रण आत्मकथा में है।

कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा लगता नहीं है दिल मेरा यह नारी होने की पीड़ा को व्यक्त करती हैं। पारिवारिक शोषण किस प्रकार स्त्रियों को अपमानित और प्रताडित करता हैं इसका जीवंत दस्तावेज 'लगता नहीं है दिल मेरा' आत्मकथा हैं। भारतीय पारिवारिक व्यवस्था नें विवाहित स्त्री को आत्मसम्मान से जीने का अधिकार नहीं दिया है। उसे अपने स्वाभिमान को त्यागकर ही जीना पडता है। शोषण को सहन करना, आत्महत्या करना या वैवाहिक जीवन का त्याग करना ये तीन पर्याय ही स्त्री के सामने पुरुष-प्रधान व्यवस्था ने रखे हैं। आत्मसम्मान और स्वाभिमान तो स्त्रियों के लिए काल्पनिक शब्द बन गए हैं। पति के अन्याय के कारण वह सुखमय जीवन हेतू परिवार का त्याग करती हैं परंतु उसको समाज भी प्रताडित और अपमानित करता हैं। कृष्णा जी कहती हैं, "कितना कठिन हैं एक स्त्री का पूरा जीवन बिना मर्द व प्यार रहित जीवन जीना। आज भी ऊँची उडान के बावजूद स्त्री अस्मिता को समाज मुठ्ठी में कैद कर रखा है। अपने को बहुत सुलझे, समझदार दाय एवं आधुनिक कहनेवाले पुरुषों ने भी बिना चढावे के किसी स्त्री की सहायत्ता शायद ही की है।" हजारो वर्षो से पोषित पुरुष प्रधान शोषित एवं उपभोगी मानसिकता ने स्त्री अस्तित्व को नकार कर उसे पुरुष निर्भर बनाया हैं। समाज में अकेले स्त्री का जीन सहज नही हैं उसे घृणित वासना और प्रताडना का शिकार होना पडता है। समाज उसे शंका की दृष्टि से देखता है। उस पर चरित्र हीनता का आरोप करता है। स्त्री आत्मनिर्भर होकर जीवन व्यतीत कर सकती है। यह धारणा पुरुषों को स्वीकार नही है। स्त्री प्रताडना का चित्रण लेखिकाने किया है।

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा दो खंडो में विभाजित है, 'कस्तुरी कुण्डल बसे' और 'गुडिया भीतर गुडिया' इस आत्मकथा में सदियों से हाशिए पर रही स्त्री पीडा और संघर्ष का चित्रण है। इस आत्मकथा में पितृसत्ताक समाज व्यवस्था का चित्रण है जहाँ पर लडकी को कोई महत्व नहीं है। लडका ही परिवार के लिए महत्वपूर्ण भुमिका निभाता है यह धारणा स्त्रियों को शोषण का अधिकारी बना देती है। पुरुषी मानसिकता में पली बडी स्त्री भी पुरुषों के समान आचरण करती हैं।

स्त्री का महत्व शरीर मात्र नही तो मनुष्य मात्र भी है इस वास्तविकता को ना स्त्री समझ पाती हैं और न ही पुरुष समझ पाता है। समाज के कूलुषित एवं विकृत परंपरा में वह स्त्री रुप में बहना ही स्वीकार करती है। और समाज में व्याप्त मानसिकता भी उसे केवल स्त्री शरीर रूप में स्वीकारने में ही धन्यता मानती हैं जिससे स्त्री हाशिए पर ढकेली गई है। मैत्रयीं पुष्पा भी परिवार और व्यवस्था के व्दारा आहत और प्रताड़ित है। मैत्रयी पुष्पा को किस प्रकार व्यवस्था द्वारा प्रताडित किया गया और उसे मानसिकता को कमजोर करने का प्रयास किया गया इसका चित्रण करते हुए वह कहती हैं, "दिल्ली शहर में आती है तो बात-बात पर उसे गँवार कहकर उसके व्यक्तित्व हनन के प्रयास किये जाते हैं। हमारे देश में यह आम बात है कि विवाह के बाद प्रतिभासंपन्न स्त्री को हीन से हीनतर करार देकर तिल-तिल मारे जाने का कुप्रयास किया जाता है ताकि वह कभी स्वाभिमान से सिर सीधा करके न चल सके।"[1] अन्याय, आत्याचार के विरोध में आवाज उठानेवाली स्त्री को, व्यवस्था से प्रश्न पूछनेवाली स्त्री को, अपने पैरों पर खडे होने का प्रयास करनेवाली स्त्री को पतित, घमंडी और हीन समजा जाता है। अपनी पहचान बनाने वाली स्त्री की पहचान मिटाने का काम पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था किस प्रकार करती है इसका चित्रण आत्मकथा में लेखिका करती है। लेखिका बंधनो को तोडकर मानवीय स्वतंत्रता में जीना चाहती हैं। मैत्रीणी पुष्पा ने "कस्तुरी कुंडली बसे खंड में भी एक स्त्री

पीडा को उघाडा है। स्त्री को आत्मनिर्भर बनाकर लाचारी और पुरुषी अधिनता से मुक्ति की बात कस्तुरी करती हैं। स्त्री को उन्मुक्त जीवन समाज जीने नहीं देता हैं। पुरुष को बंधनयुक्त स्त्री प्रिय लगती हैं और उन्मुक्त स्त्री अप्रिय लगती हैं

पुरुष यह कभी नहीं चाहेगा कि स्त्री स्वतंत्र एवं मानवता की अधिकारी बने। पुरुष की धारणा होती है कि स्त्री का अस्तित्व केवल चार दीवारों तक ही सीमित हो इस मानसिकता को तोड़ने का साहस लेखिकाने किया है। "सामना कर लाली ऑखे मत चुरा। मै तो समझती थी तू वही स्कुल के जमाने की लडकी है, जो खरा कहती और खड़ी हो जाती थी। अगर तू उसके मनमुताबिक चलेगी, जिसमें बच्चा करना भी शामिल है, तू यह भी समझ कि अब वह पुराना जमाना नहीं कि आदमी लादे, औरत ढोए। फिर तू पति के आनंद के लिए अपनी दुश्मन क्यों हो गई? सतर्क उसे ही रहना होता है, जिसे झेलना है तकलीफ यही हैं कि इस कष्ट का संबंध तुझसे है, जिसे मैंने सर्वस्व लगाकर पढाया, उसे गर्भ प्रसव और लालन-पालन जैसे बकवास रवैया की दीमक चाट जाएगी।"[2] स्त्री अस्मिता को केवल परिवार और गुलामी तक सीमित रखने की मानसिकता का विरोध आत्मकथा में हुआ है। स्त्री को हाशिए पर रखने का कार्य पुरुषी व्यवस्था ने बखूबी किया है।

कौसल्या बैसंत्री की **दोहरा अभिशाप** आत्मकथा स्त्री जीवन की करुण गाथा है। एक तरफ स्त्री होने का तो दूसरी तरफ दलित होने का अभिशप्त जीवन व्यतीत करने वाली स्त्री की त्रासदी को आत्मकथा उजगार करती हैं। दलित और स्त्री होने की पीडा एवं वेदना क्या होती है इसका चित्रण आत्मकथा में हैं। दलितों में अशिक्षा, बेरोजगारी, निम्न आर्थिक स्थिति एंवं अंधश्रध्दा के कारण स्त्रियों का शोषण होता है जिस कारण उन्हें संपूर्ण जीवन अभावों में जीना पडता है तो दूसरी तरफ स्त्री होने का दर्द है।

पुरुषों की निर्ममता, असंवेदनशीलता एवं पुरुषी अहंकार के कारण उपजी दासता वृत्ति आदि के कारण एक दलित स्त्री दोहरे अभिशाप में जीती है। इसी दोहरे शोषण के आधार पर लेखिका ने दोहरा अभिशाप यह शीर्षक अपनी आत्मकथा को दिया है। समाज में व्याप्त विकृतियों तथा विडंबनाओं का साहस के साथ विरोध करती हुई शिक्षा ग्रहण करती है। लेखिका बडे, अरमानों के साथ देवेंद्र कुमार से विवाह करती हैं, परंतु बाकी पुरुषों के समान ही शारीरिक भूख मिटाने और नोंकरो की तरह घर के सारे काम तक लेखिका को सीमित रखा जाता है। शोषण, अन्याय और अपमान सहन करने से लेखिका अस्वीकार करती है और सम्मानपूर्वक जीवन जीने हेतु पति से अलग होने का निर्णय लेती हैं। अपने जिद्दी, घमंडी पति के विषय में वह कहती हैं। "देवेंद्र कुमार को पत्नी सिर्फ खाना बनाने और उसकी शारीरिक भूख मिटाने के लिए चाहिए थी।"[3] उनके पति ने कभी लेखिका के साथ मानवीय व्यवहार नहीं किया। लेखिका को सदैव प्रताड़ित किया जाता। पुरूषों की स्त्रियों के प्रति धारणा को उघाडते हुए कौशल्या कहती है "उसने मेरी इच्छा, भावना, खुशी की कभी कद्र नहीं की। बात-बात पर गाली, वह भी गंदी-गंदी और हाथ उठाना, मारता भी था। बहुत क्रूर तरीके से उसकी बहनों ने मुझे बताया था कि वह माँ-बाप, पहली पत्नी को भी पीटता था।"[4] अनेक विरोधों के बाबजूत लेखिका ने आत्मकथा में अपने त्रासदी को उघाडा। पति, भाई और पुत्र ने भी विरोध जताया। उन्हे लगता है कि स्त्री जीवन बना ही दासता और पुरुषों के अधिनता के लिए। लेखिका अपनी भूमिका में कहती है, "पुत्र, भाई, पति सब नाराज हो सकते हैं, परंतु मुझे भी स्वतंत्रता चाहिए कि मैं भी अपनी बात समाज के सामने रख सकू मेरे जैसे अनुभव और भी महिलाओं को आए होंगे परंतु समाज और परिवार के भय से अपने अनुभव समाज के सामने उजागर करने से डरती और जीवन भर घुटन में जीती है। समाज की ऑखे खोलने के लिए ऐसे अनुभव सामने आने की जरूरत हैं"[5] आत्मकथा में महिलाओं का होनेवाला आर्थिक, मानसिक, शारीरिक एंव मानसिक शोषण व्यक्त हुआ हैं। असमानता का भाव, स्त्रियों को विकास का प्रर्याप्त अवसर न देना, निर्णय प्रक्रिया में दोयमस्थान, चारदीवारों तक स्त्री अस्तित्व को सीमित रखना, स्त्रियों का दमन एवं शोषण आदि को आत्मकथा के माध्यम से उदघाटित किया गया है।

'शिकंजे का दर्द' सुशीला टाकभौरे लिखित आत्मकथा है जो स्त्री वेदना तथा संघर्ष का सशक्त दस्तावेज है। आत्मकथा स्त्री और दलित होने की वेदना की करुण गाथा है। एक तरफ दलित स्त्रियों के प्रति समाज की घृणित, विकृत और कुपोषित मानसिकता और दूसरी तरफ पुरुषी अहंकारी, दमनपूर्ण, असमानतावादी एवं विषाक्त मानसिकता ऐसे दोहरे शिकंजे में फसी सभी की कहानी शिकंजे का दर्द आत्मकथा है। दलित स्त्री दोहरे अभिशाप में जीती है। एक तरफ स्त्री होने का दर्द जो उसे अपमानित एवं प्रताडित करता हैं। दूसरी तरफ दलित होने का दर्द जो उसके शोषण, अन्याय, विरोध एवं तिरस्कार का उत्तरदाई है। दलित समाज में व्याप्त अंधश्रध्दा, दैववाद, बेरोजगारी, आर्थिक विपन्नता, नशाखोरी, निम्न जीवन स्तर तथा सुख-सुविधाओं का अभाव स्त्री जीवन को और बदहाल बना देता हैं। वर्णवाद, जाति-पाति, छुआछूत, एवं ऊच्च-नीचता, के कारण दलित स्त्री सदैव प्रताडना का शिकार होती है। शिकंजे का दर्द ऐसे ही स्त्री की कथा है जो शोषण, विषमता, अपमान, पीडा, रीति रिवाज, परंपरा, लिंगभेद, गरिबी एवं तिरस्कार के चक्रव्यूह में फँसी हैं।

महिलाओं की आत्मकथाएँ उनके संघर्ष एवं चेतना की दस्तावेज हैं। अपनी भोगी हुई पीड़ा के माध्यम से हाशिए के समाज में नवनिर्माण का कार्य किया है। व्यवस्था द्वारा निर्माण दहलीज को तोड़ने का साहस इन लेखिकाओं ने किया हैं। जिससे दबे कुचले लोगों में परिवर्तन की मशाल जल उठी हैं। किसान, दलित, स्त्री, आदिवासी आदि हाशिए के लोगों को संघर्ष की प्रेरणा आत्मकथा देती है। हिन्दी महिला आत्मकथाकारों ने निर्भिकता से लोकलाज और बंधनों को त्यागकर अपनी वास्तविकता को समाज के सामने लाया है। जो अन्य स्त्रियों के उत्थान और मुक्ति का प्रेरक है। स्त्री आत्मकथा हाशिए पर रही स्त्री के लिए परिवर्तन, संघर्ष, क्रांति एवं मुक्ति की संवाहक बन गयी है।

संदर्भ :

१) गुडिया भीतर गुडिया, मैत्रयी पुष्पा पृ. ३५

२) कस्तुरी कुंडली बसै, मैत्रयी पुष्पा - पृ.२३५

३) दोहरा अभिशाप - कौसल्या बैसंत्री पृ. १०६

४) वही. पृ. १०४

५) वही पृ. ०८

❋❋❋